| MAY 2014 | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| M | T | W | T | F | S | S |
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

तृतीय पत्र - प्रसाद निराला पंत महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ

व्याख्यान-19 स्नातक द्वितीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा

प्रो॰ हरे कृष्ण मनोहर, एसोसिएट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, जे॰एन॰ कॉलेज, मधुबनी

## 'पेशोला की प्रतिध्वनि' शीर्षक कविता की समीक्षा

'पेशोला की प्रतिध्वनि' शीर्षक कविता महाकवि जयशंकर प्रसाद के काव्य-संग्रह 'लहर' की एक श्रेष्ठ आख्यानक रचना है। प्रस्तुत कविता में कवि प्रसाद ने अतीत के गौरवमय प्रसंगों का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रीयता का दीप प्रज्ज्वलित किया है। राष्ट्रीय जागरण के शंखनाद से वर्तमान की धूँधली परवशता से मुक्ति के लिए ही कवि ने इस कविता का प्रणयन किया है। पेशोला की प्रतिध्वनि, एक कोई दूसरी ध्वनि नहीं, बल्कि उदयपुर की पिछोला झील की प्रतिध्वनि है। उदयपुर की यह झील, उसके खेत-खलिहान, मैदान एवं सारी प्राकृतिक वस्तुएँ आज भी वर्तमान हैं, परन्तु महाराणा प्रताप की वीरता कहीं खो गयी है।

उदयपुर की वर्तमान पराभूत, पददलित एवं गलित स्थितियों का चित्रण करते हुए कवि ने लिखा है कि उदयपुर में आज पूर्व की भाँति ओज और शौर्य नहीं रह गया है। पेशोला का अरुण-करुण बिम्ब चतुर्दिक दिखाई पड़ता है। यह बिम्ब निर्धूम भस्म रहित ज्वलंत पिण्ड की तरह दिखाई पड़ रहा है। विकल विवर्तनों एवं प्रवर्तनों से यह थकित-श्रमित होकर पश्चिम आकाश में दिनमान की भाँति स्खलित हो गया है। आज यह पूर्णतः निरवलम्ब-सा होकर डूब रहा है। आज यह मेवाड़ की वीर-भूमि शौर्य एवं वीरता से शून्य हो गया है। सारे विश्व में आत्म आहुतियों एवं आत्म बलिदान के लिए प्रसिद्ध यह मेवाड़-भूमि आज नितान्त शांत एवं तेजस्विता से हीन हो गयी है। ओज, तेज और बल में इसकी समता करनेवाला कोई नहीं था परन्तु आज पेशोला की चंचल लहरें शांत हो गयी हैं। इसकी उत्ताल तरंगों से अब वीरता की गाथा सुनाई नहीं पड़ती है। आज इसके तट पर मौन निःस्तब्धता छायी हुई है। इसके मौन तट पर स्थित तरुवृन्द शांत हैं और वे विषाद की धुंध में चुपचाप खड़े हैं। मेवाड़ के पेशोला का तट कभी रक्त के कण-कण से रक्तिम हो उठी थी, उसके खौलते जल में वीर योद्धाओं का दर्प कभी प्रवाहित होता था। देश की स्वतंत्रता के लिए प्रबल उमंग की भावना थी। अगणित वीरों का रक्त इस झील के जल में मिलकर प्रवाहित हुआ था, लेकिन आज परिस्थितियाँ बदल गयी हैं।

कविवर प्रसाद ने लिखा है कि जिस प्रकार निर्जन अनन्त में धूसर बादलों के खण्ड भटकते हैं, उसी प्रकार उदयपुर के शौर्य आज भटक रहे हैं। [illegible] और संध्या के कलंक की भाँति कालिमा बिखर रही है। दुन्दुभि, मृदंग, तूर्य आज शांत हो गये

हैं। युद्ध भूमि में होनेवाला तूर्यनाद आज मौन पड़ा है। फिर भी आकाश में पुकार गूँज रही है। इस देश की दुर्दशा को दूर करने का भार कौन लेगा। कौन ऐसा वीर पुरुष है जो युद्धभूमि में विचलित नहीं होगा। कौन ऐसा शौर्यशाली है जो इस अस्थि-माँस की दुर्बलता को लोहे से पीट-ठोककर, वज्र से परखकर प्रलय उल्का खण्ड के निकष पर कसकर अट्टहास करेगा। देश की वर्तमान स्थिति सुधारने के लिए कौन ऐसा व्यक्ति है, जो अपने प्राणों को बलिवेदी पर उत्सर्ग करने को तत्पर है। परतंत्रता एवं पराभव की कालिमा में भटक रहे इस मेवाड़ में कौन ऐसा वीर है, जो अपनी छाती ऊँची कर कह रहा है कि मैं जीवित हूँ, मेरी साँसें चल रही हैं, मेरा रक्त खौल रहा है। आत्म-बलि की भावना से मैं ओतप्रोत हूँ। अरावली की उन्नत चोटी की भाँति किसका सर उन्नत है। पेशोला की चंचल लहरियाँ प्रश्न करती हैं कि मेवाड़ के युवकों में से कौन ऐसा है पुरुष है जो इस आँधी-तूफान में देश को पतन रक्षा कर सके। पतवार थाम कर पतन के गर्त से देश की नौका को कौन बाहर ले जा सकता है। अभी नियति की घोर अंधतम छाया सम्पूर्ण देश पर छायी है। कहीं भी ज्योति की एक हल्की रेखा भी नहीं है। कालरूपी मल्लाह इस देश की नौका को गहन अंधकार में ले गया है। तब तुम्हारी आशा किस पर लगी हुई है।

मुक्तक छन्द में रचित प्रसाद जी की इस कविता में भारत के विगत गरिमामंडित अतीत का चित्रण हुआ है। परतंत्र और पददलित देश के लिए उसका अतीत अत्यन्त ही प्रेरणादायक होता है। अवनत राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर प्रतिष्ठापित करने के लिए अतीत के गौरवमय स्वरूप का उद्घाटन और स्मरण आवश्यक हो जाता है।